

हिंदी परियोजना कार्य

Avantika Saraf

XII

UID-

Reg. No -

विषय -

Comparing and contrasting 'Babu Chetanyadas' from Putraprem
- Premchand (Gadya Sankalan) and 'Sukhiya ke Pita' from Ek Phool
Ki Chah - Siyaram Sharan Gupt (Kavya Manjari)

पुत्रप्रेम - प्रेमचंद से 'बाबू चेतन्यदास' (गद्य संकलन) और 'एक फूल की चाह'
- सियाराम शरण गुप्त से 'सुखिया के पिता' (काव्य मंजरी) की तुलना

अनुक्रमणिका

क्रम संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1	भूमिका	3
2	लेखक परिचय	4-5
3	कहानी का सारांश	6-7
4	चरित्र चित्रण	8
5	दोनों के चरित्र में विषमनाए	9
6	निष्कर्ष	10
7	ग्रंथ सूची	11
8	अभिस्वीकृति	12

भूमिका

इस परियोजना का उद्देश्य हिंदी साहित्य की दो प्रमुख कहानियों - 'एक फूल की चाह' और 'पुत्रप्रेम' - के माध्यम से दो अलग-अलग पिता-पुत्र/पुत्री संबंधों का विश्लेषण करना है। इन कहानियों के पात्र सुखिया के पिता और बाबू चैतन्यदास की परिस्थितियाँ और व्यक्तित्व भिन्न हैं। इस परियोजना में हम इन दोनों पात्रों के बीच की विषमताओं और समानताओं का विस्तार से अध्ययन करेंगे।

सुखिया के पिता 'एक फूल की चाह' में एक गरीब और मेहनती व्यक्ति हैं, जिनका जीवन संघर्ष और कठिनाइयों से भरा है। वे अपनी बेटी सुखिया की खुशियों के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और अपनी सीमित साधनों के बावजूद उसकी इच्छाओं को पूरा करने का हर संभव प्रयास करते हैं। उनका स्वभाव सरल, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ है, जो अपने परिवार के प्रति निस्वार्थ प्रेम दिखाता है। वे समाज की परवाह किए बिना अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हैं और अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करते हैं।

दूसरी ओर, बाबू चैतन्यदास 'पुत्रप्रेम' में एक संपन्न व्यक्ति हैं, जिनके पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है। उन्होंने अपने बेटे प्रभुदास के इलाज के लिए अपने पैसे का एक छोटा सा हिस्सा भी निवेश नहीं किया क्योंकि वह कोई अनिश्चित निवेश नहीं करना चाहते थे। वह अपने बेटे से कहीं अधिक अपने पैसे की परवाह करता है।

इस परियोजना के माध्यम से हम यह समझने का प्रयास करेंगे कि कैसे सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ एक व्यक्ति के स्वभाव और उसके पारिवारिक संबंधों को प्रभावित करती हैं।

लेखक परिचय

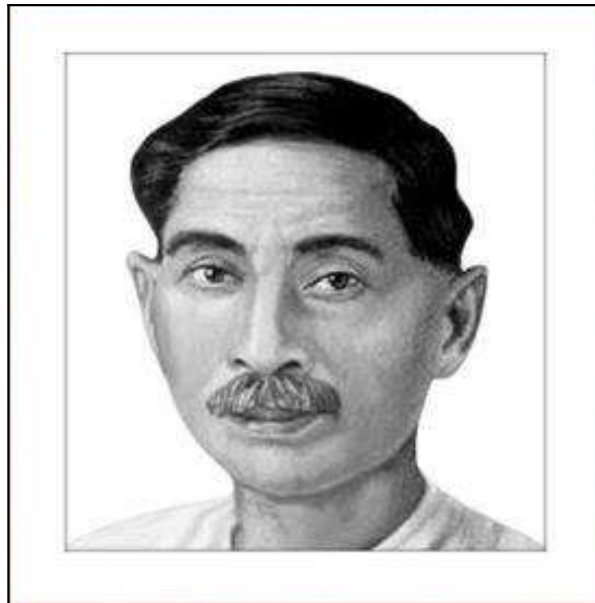
पुत्र प्रेम - मुंशी प्रेमचंद

मुंशी प्रेमचंद, जिनका असली नाम धनपत राय श्रीवास्तव था, भारतीय साहित्य के एक महान और प्रभावशाली लेखक थे। उन्होंने अपने जीवनकाल में समाज की विभिन्न विषम पहलुओं को लेकर काफी गहराई से लिखा और उन्हें साहित्य के माध्यम से उजागर किया। प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० को वाराणसी में हुआ था। उनके पिता श्रीवास्तव नगर सभा में कार्यरत थे और उनकी शिक्षा प्राथमिक रूप से हिंदी, संस्कृत, अंग्रेजी और उर्दू में हुई।

प्रेमचंद ने अपने जीवन में विभिन्न नामों से लेखन किया, जैसे कि 'नमक का दरोगा' के नाम से वे माने जाते थे। उनके लेखन में समाज, राजनीति, संघर्ष, प्रेम और मानवता के मुद्दे गहराई से प्रकट होते हैं। उनकी कहानियाँ आम आदमी की जीवनी में सामाजिक न्याय, व्यक्तिगत प्रेम और विचारों के विस्तारित प्रकटीकरण के माध्यम से जुड़ती हैं।

प्रेमचंद के लेखन में स्वतंत्रता संग्राम, सामाजिक अन्याय, गरीबी और व्यक्तिगत प्रेम के मुद्दे विशेष रूप से महत्वपूर्ण थे। उनकी रचनाओं में भारतीय समाज की विभिन्न विषमताओं का संवेदनशील विवेचन किया गया है और उन्होंने अपनी कहानियों के माध्यम से समाज को सुधारने की प्रेरणा दी।

उनके लेखन का प्रभाव आज भी महसूस किया जाता है और उन्हें 'हिंदी के उपन्यास सम्राट' के रूप में याद किया जाता है।



मुंशी प्रेमचंद

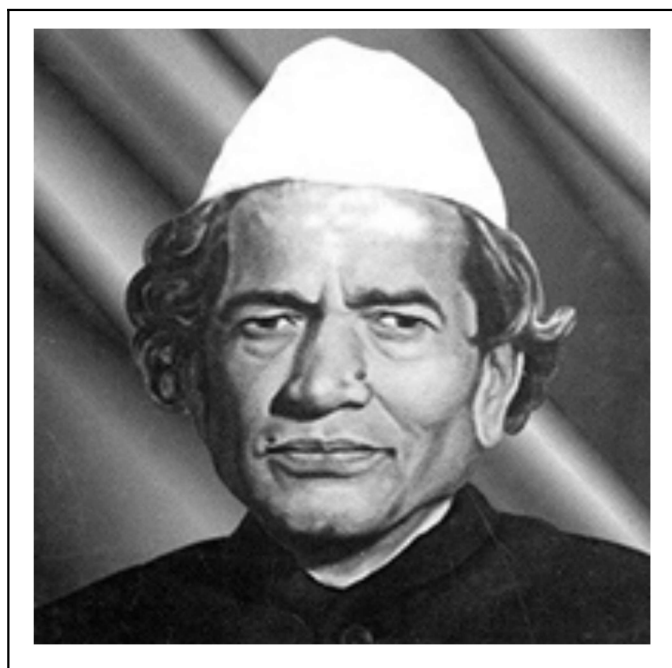
एक फूल की चाह - सियाराम शरण गुप्त

सियाराम शरण गुप्त हिंदी साहित्य के प्रसिद्ध कवि और लेखक थे। उनका जन्म ४ सितंबर १८९५ को चिरगांव, झांसी, उत्तर प्रदेश में हुआ था। वे भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित कविताओं के लिए प्रसिद्ध हैं। उनकी कविताओं में भारतीय संस्कृति, नैतिकता और मानवता के प्रति गहन प्रेम झलकता है।

गुप्त जी ने प्रारंभिक शिक्षा गांव में ही प्राप्त की और बाद में काशी विद्यापीठ से अध्ययन किया। उन्होंने महात्मा गांधी और भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के प्रति समर्पण भाव से प्रेरित होकर कई रचनाएं कीं। उनकी प्रमुख कृतियों में "द्वापर," "जयभारत," "मंदिर-मंदिर" और "एक फूल की चाह" शामिल हैं। उनकी रचनाओं में ग्रामीण जीवन, भारतीय संस्कृति और धार्मिकता का अद्भुत संगम मिलता है।

सियाराम शरण गुप्त की लेखनी सरल, सहज और प्रभावशाली थी। उनकी कविताओं में प्रकृति, मानवता और जीवन की सच्चाइयों का चित्रण मिलता है। वे हिंदी साहित्य में खड़ी बोली के प्रारंभिक कवियों में से एक थे और उन्होंने हिंदी साहित्य को समृद्ध बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनकी रचनाएं आज भी साहित्य प्रेमियों के बीच लोकप्रिय हैं और उनकी कविताएं हमें जीवन के गहरे अर्थों को समझने की प्रेरणा देती हैं।

सियाराम शरण गुप्त का निधन २९ मार्च १९६३ को हुआ। उनकी साहित्यिक धरोहर आज भी हमें प्रेरणा देती है और उनकी रचनाएं हिंदी साहित्य में अमर हैं। उनकी कविताओं और लेखों के माध्यम से वे हमेशा साहित्य प्रेमियों के दिलों में जीवित रहेंगे।



सियाराम शरण गुप्त

कहानी का सारांश

पुत्र प्रेम

‘पुत्र प्रेम’ हिंदी साहित्य के महान रचनाकार मुंशी प्रेमचंद द्वारा रचित है। बाबू चैतन्यदास एक वकील थे और दो – तीन गाँव के जमींदार भी थे। वे बहुत सोच समझकर खर्च करते थे। उनके दो – पुत्र थे। बड़े पुत्र का नाम प्रभुदास और छोटे का नाम शिवदास था। दोनों कॉलेज में पढ़ते थे। प्रभुदास पर पिता का स्नेह अधिक था। वे उसे इंग्लैंड भेजकर बैरिस्टर बनाना चाहते थे।

कुछ ऐसा संयोग हुआ कि प्रभुदास को बी० ए० की परीक्षा के बाद ज्वर आने लगा। एक महीने तक इलाज करवाने के बाद भी ज्वर कम नहीं हुआ। डॉक्टर ने कहा कि उसे तपेदिक हुआ था। उनकी सलाह थी कि उसे इटली के सेनेटोरियम में भेज दिया जाए जिसके लिए लगभग तीन हजार का खर्च लगते। वहाँ साल भर रहना होगा परंतु यह निश्चय नहीं कि वहाँ से पूरी तरह ठीक होकर ही लौटेंगे। यह सब सुनकर चैतन्यदास ने अपने बेटे प्रभुदास को इलाज के लिए इटली नहीं भेजा। उनकी पत्नी उनके निर्णय से सहमत न थी परन्तु बाबू अपने निर्णय पर स्थिर थे।

छह महीने बाद शिवदास बी० ए० पास हुआ तो चैतन्यदास ने उसे इंग्लैंड भेज दिया। उसके थोड़े समय बाद ही प्रभुदास की मृत्यु हो गई। बनारस के मणिकर्णिका घाट पर प्रभुदास का अंतिम संस्कार करके चैतन्यदास उसके बारे में सोच रहे थे। कि इलाज के लिए इटली भेज देता तो वह बच जाता। तभी अचानक उसने देखा शहनाई के साथ, ढोल बजाते, गाते पुष्प वर्षा करते कुछ लोग अर्थी का अंतिम संस्कार करने के लिए आए।

सभी लोग कह रहे थे कि पुत्र ने अपने पिता की बहुत सेवा की। पुत्र ने अपनी जायदाद बेच दी और उन पैसे से पिता के इलाज के लिए कई सेहरो के चिकित्सक को दिखाया परन्तु उनके पिता बच न पाये। पुत्र ने कहा कि उनके पिता के लिए वह जो कर सका उसने किया और अब उसे कोई ग्लानि नहीं थी। यह सब सुनकर चैतन्यदास को बहुत ग्लानि हुई। वह पश्चाताप के भाव से भर गया। यही कारण था कि उसने बहुत सा धन प्रभुदास के अंतिम संस्कार पर लगा दिया।

एक फूल की चाह

‘एक फूल की चाह’ कविता छुआछूत की समस्या पर केंद्रित है। कवि कहते हैं कि एक बड़े स्तर पर फैलने वाली बीमारी बहुत भयानक रूप से फैली हुई थी। उस महामारी ने लोगों के मन में भयानक डर बैठा दिया था। इस कविता का मुख्य पात्र अपनी बेटी जिसका नाम सुखिया था, को बार-बार बाहर जाने से रोकता था। लेकिन सुखिया उसकी एक न मानती थी और खेलने के लिए बाहर चली जाती थी। जब भी वह अपनी बेटी को बाहर जाते हुए देखता था तो उसका हृदय डर के मारे काँप उठता था। वह यही सोचता रहता था कि किसी तरह उसकी बेटी उस महामारी के प्रकोप से बच जाए।

एक दिन सुखिया के पिता ने ज्ञान पाया कि सुखिया का शरीर बुखार से तप रहा था। उस बच्ची ने अपने पिता से कहा कि वह तो बस देवी माँ के प्रसाद का एक फूल चाहती थी। जब सुखिया के पिता मंदिर में प्रवेश करते हैं तब वहाँ मंदिर में भक्तों के झुंड मधुर आवाज़ में एक सुर में भक्ति के साथ देवी माँ की आराधना कर रहे थे। सुखिया के पिता के मुँह से भी देवी माँ की स्तुति निकल गई। पुजारी ने सुखिया के पिता के हाथों से दीप और फूल लिए और देवी की प्रतिमा को अर्पित कर दिया। फिर जब पुजारी ने उसे दोनों हाथों में प्रसाद भरकर दिया तो एक पल को वे ठिठक से गए क्योंकि वे छोटी जाति के थे और छोटी जाति के लोगों को मंदिर में आने नहीं दिया जाता था।

सुखिया का पिता प्रसाद ले कर मंदिर के द्वार तक भी नहीं पहुँच पाए थे कि अचानक किसी ने पीछे से आवाज लगाई, “अरे यह अछूत मंदिर के भीतर कैसे आ गया? इसे पकड़ो कहीं यह भाग न जाए।” वे कह रहे थे कि सुखिया के पिता ने मंदिर में घुसकर बड़ा भारी अनर्थ कर दिया है और लम्बे समय से बनी मंदिर की पवित्रता को अशुद्ध कर दिया है।

इस पर सुखिया के पिता ने कहा कि जब माता ने ही सभी मनुष्यों को बनाया है तो उसके मंदिर में आने से मंदिर अशुद्ध कैसे हो सकता है। यदि वे लोग उसकी अशुद्धता को माता की महिमा से भी ऊँचा मानते हैं तो वे माता के ही सामने माता को नीचा दिखा रहे हैं। लेकिन उसकी बातों का किसी पर कोई असर नहीं हुआ। लोगों ने उसे घेर लिया और उसपर घूँसों और लातों की बरसात करके उन्हें नीचे गिरा दिया। सुखिया के पिता के हाथों से फूल गिर गए। वे अपनी बीमार बच्ची के इकलोती इच्छा पूरी न कर पाये। दुनिया ने छोटी जाति के लोगो पर किये गये अत्याचार और अन्याय को सिद्ध कर दिया था।

चरित्र चित्रण

बाबू चैतन्यदास

बाबू चैतन्यदास शहर के जाने-माने वकील थे जिन्होंने अर्थशास्त्र खूब पढ़ा था । उनका स्पष्ट मानना था कि यदि खर्च करने के बाद स्वयं का या किसी दूसरे का उपकार नहीं होता है तो वह खर्च व्यर्थ है और उसे नहीं करना चाहिए। बाबू चैतन्यदास जी ने अर्थशास्त्र को अपने जीवन का आधार बना लिया था। अपने पुत्र प्रभुदास को तपेदिक होने पर वे डॉक्टर के कहने पर उन्हें इटली सेनेटोरियम भेजने का सुझाव अमान्य कर देते हैं । वस्तुतः तीन हजार :खर्च करने पर भी डॉक्टर इसकी निश्चितता नहीं देते । जबकी छोटे बेटे को जमीन बंधक रखकर वे पढ़ने इंग्लैंड भेज देते हैं । बाबू चैतन्यदास अपने पूर्वजों की संचित संपत्ति को अनिश्चित हित की आशा पर बलिदान नहीं करना चाहते थे। प्रभुदास की मृत्यु हो जाती है । अपने शोक संतप्त हृदय की शांति के लिए वे प्रभुदास की अंत्येष्टि पर हजारों रुपए खर्च करते हैं और यह उनका प्रायश्चित भी था एवं अपने दुखी मन को शांत करने का उपाय भी। बाबू चैतन्यदास ने कृपणता के कारण अपने परिवार के भावनात्मक रिश्ते की तिलाजलि देकर अपनी संपत्ति की रक्षा की और अंततः अपने पुत्र को खोकर आत्म-ग्लानि में डूब गए।

सुखिया के पिता

सुखिया के पिता का चरित्र 'एक फूल की चाह' में एक आदर्श, निस्वार्थ और प्रेमपूर्ण पिताके रूप में उभरकर आता है। वे अत्यंत मेहनती और ईमानदार व्यक्ति हैं, जिनका जीवन अपने परिवार के प्रति समर्पित है। सुखिया के पिता गरीब होते हुए भी अपनी बेटी की खुशियों के लिए किसी भी हद तक जाने के लिए तत्पर रहते हैं। वे अपनी बेटी के उज्ज्वल भविष्य के लिए हर संभव प्रयास करते हैं और उसके सपनों को साकार करने की हर कोशिश करते हैं। उनकी सबसे बड़ी चिंता सुखिया की शादी और उसका सुखी जीवन है। वे समाज की परवाह किए बिना अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हैं और अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करते हैं। उनका सरल और सहज स्वभाव, कर्तव्यपरायणता और अपने परिवार के प्रति अटूट प्रेम, उन्हें एक आदर्श और प्रेरणादायक पिता के रूप में प्रस्तुत करता है।

दोनों के चरित्र में विषमनाए

पुत्रप्रेम में बाबू चैतन्यदास एक अमीर व्यक्ति है जिन्हें सन-साधनों की कमी नहीं है। वह अपने निर्णय लेते समय अर्थशास्त्र पर भरोसा करता है। यदि उनसे उसे या उसके परिवार को लाभ नहीं होता है तो वह निवेश नहीं करता है। उन्होंने अपने बेटे प्रभुदास के इलाज के लिए अपने पैसे का एक छोटा सा हिस्सा भी निवेश नहीं किया क्योंकि वह कोई अनिश्चित निवेश नहीं करना चाहते थे, उन्हें इस बात की परवाह नहीं थी कि अगर उनके बेटे को उन्होंने इटली के सेनेटोरियम में नहीं भेजा तो उनकी मृत्यु निश्चित है। दूसरी ओर सुखिया के पिता अपनी बेटी की बरामदगी के लिए हर संभव कोशिश करने को तैयार हैं। वह इस तथ्य की परवाह किए बिना कि वह निचली जाति का है, एक मंदिर में जाता है, यह जानते हुए भी कि यदि उसे किसी मंदिर में पाया गया, तो उसे गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। उनकी एकमात्र चिंता अपनी बेटी की बरामदगी थी।

बाबू चैतन्यदास को वास्तव में इस बात की परवाह नहीं है कि उनका बेटा बीमार है, सिवाय इसके कि जब उनका बुखार एक महीने तक कम नहीं होता है तो डॉक्टर को बुला लें। जैसे ही उसे पता चलता है कि उसके बेटे की बरामदगी अनिश्चित होगी, वह अपने बेटे को बचाने की कोशिश करना छोड़ देता है। वह अपने बेटे से कहीं अधिक अपने पैसे की परवाह करता है। दूसरी ओर सुखिया के पिता उसके बीमार होने पर गमगीन थे। वह घंटों उसके बिस्तर के पास बैठा रहता और उसके ठीक होने के लिए प्रार्थना करता। वह अचेतन अवस्था में होता, उसे पता ही नहीं चलता कि कब रात दिन में और दिन रात में बदल गया। उनकी एकमात्र चिंता अपनी बेटी की बरामदगी थी। उन्हें अपनी बेटी के स्वास्थ्य के अलावा किसी और चीज़ की परवाह नहीं थी, यहाँ तक कि अपनी भी नहीं।

निष्कर्ष

इस परियोजना के निष्कर्ष से यह स्पष्ट होता है कि 'एक फूल की चाह' और 'पुत्रप्रेम' के पात्र सुखिया के पिता और बाबू चैतन्यदास अपने बच्चों के प्रति प्रेम और समर्पण में समान होते हुए भी भिन्न परिस्थितियों और व्यक्तित्व के कारण अलग-अलग दृष्टिकोण अपनाते हैं।

सुखिया के पिता 'एक फूल की चाह' में एक गरीब और मेहनती व्यक्ति हैं, जिनका जीवन संघर्ष और कठिनाइयों से भरा है। वे अपनी बेटी सुखिया की खुशियों के लिए कड़ी मेहनत करते हैं और अपनी सीमित साधनों के बावजूद उसकी इच्छाओं को पूरा करने का हर संभव प्रयास करते हैं। उनका स्वभाव सरल, ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ है, जो अपने परिवार के प्रति निस्वार्थ प्रेम दिखाता है। वे समाज की परवाह किए बिना अपने सिद्धांतों पर अडिग रहते हैं और अपने कर्तव्यों का पालन पूरी निष्ठा और ईमानदारी से करते हैं।

दूसरी ओर, बाबू चैतन्यदास 'पुत्रप्रेम' में एक संपन्न व्यक्ति हैं, जिनके पास संसाधनों की कोई कमी नहीं है। उन्होंने अपने बेटे प्रभुदास के इलाज के लिए अपने पैसे का एक छोटा सा हिस्सा भी निवेश नहीं किया क्योंकि वह कोई अनिश्चित निवेश नहीं करना चाहते थे। वह अपने बेटे से कहीं अधिक अपने पैसे की परवाह करता है।

इन दोनों कहानियों के माध्यम से हमें यह समझने को मिलता है कि सामाजिक और आर्थिक परिस्थितियाँ एक व्यक्ति के स्वभाव और उसके पारिवारिक संबंधों को किस प्रकार प्रभावित कर सकती हैं। इस परियोजना के अध्ययन से प्राप्त शिक्षा और प्रेरणा हमारे व्यक्तिगत और पारिवारिक जीवन को संतुलित और सुदृढ़ बनाने में सहायक हो सकती है।

ग्रंथ सूची

- गद्य संकलन
- काव्य मंजरी

अभिस्वीकृति

मैं अपनी अध्यापिका का सहृदय धन्यवाद करना चाहती हूँ कि उन्होंने मुझे इतनी शिक्षाप्रद परियोजना बनाने का यह अवसर प्रदान किया। इस परियोजना कार्य में मुझे 'पुत्रप्रेम' और 'एक फूल की चाह' से बहुत कुछ सिखने को मिला। मुझे दोनों कवियों के बारे में भी बहुत कुछ नया पता चला और हिंदी भाषा के लिए प्रेम और भी बढ़ग गया। मैं अपने माता-पिता का भी हार्दिक धन्यवाद करना चाहूंगी क्योंकि उनकी सहायता के बिना यह परियोजना बनाने में मैं सफल नहीं हो पाती। मैं भविष्य में भी ऐसी शिक्षाप्रद परियोजना बनाने की आशा करती हूँ।